मार्च 2026, वर्ष - 01, अंक - 03

# मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न, सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

आवरण चित्र : सुइता मण्डल, बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

**संरक्षक/प्राचार्य**

प्रो.अवधेश नारायण सिंह

**सम्पादक**

डॉ.राजेश कुमार सिंह

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर
ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

मार्च 2026, वर्ष - 01, अंक - 03

# मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. अवधेश नारायण सिंह

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार सिंह

युवा सम्पादक मण्डल

***************

सहायक सम्पादक

तनीशा चावला
नेपोलियन

साहित्य सम्पादक

अनामिका सिंह
शुवांशु बिष्ट
कैलाश चौधरी

समाचार सम्पादक

सालेहा खातून
दिया टाकुली
कुमकुम मिश्रा

क्रीड़ा सम्पादक

सरिता बिष्ट

कला सम्पादक

सुइता मण्डल

मार्च 2026, वर्ष - 01, अंक - 03

# मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

एस.बी.एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर
SBS GOVT. POST GRADUATE COLLEGE RUDRAPUR
1974

## भीतर के पन्नों में

******************


01- प्राचार्य का संदेश — पृष्ठ संख्या: 04

02- सम्पादक की कलम से — पृष्ठ संख्या: 05-06

03- साक्षात्कार : वीरेन्द्र — पृष्ठ संख्या: 07-12

04- Alumnae Corner: महाविद्यालय के अनमोल सितारे — पृष्ठ संख्या: 13

05- Alumnae Corner: AI and Future of Work Opportunity or Threat - Divyanshi Yadav — पृष्ठ संख्या: 14-16

06- Union of Hearts : Tannu Goyal — पृष्ठ संख्या: 17

07- They Call Them Non-Living, But Not for Me - Tannu Goyal — पृष्ठ संख्या: 18-19

08- अमिट इबारत: सालेहा खातून — पृष्ठ संख्या: 20

09- मैं नहीं मानती: अनामिका सिंह — पृष्ठ संख्या: 21-23

10- सुकून का मलबे से नाता: देवकी — पृष्ठ संख्या: 24-25

11- आग और झंडों के बीच: पूजा पाठक — पृष्ठ संख्या: 26

12- कमजोर थोड़ी न हूँ मैं: कविता — पृष्ठ संख्या: 27-28

13- मेरे सपनों का भारत: प्रीति मेहरा — पृष्ठ संख्या: 29-30

14- जीवन की डोर: अफशा अंजुम — पृष्ठ संख्या: 30

15- कॉलेज का वो पहला दिन: कुमकुम मिश्रा — पृष्ठ संख्या: 31-32

16- अन्तर्मन की शांति: पूजा रस्तोगी — पृष्ठ संख्या: 32

17- एक पेड़ की आखिरी चिट्ठी: संगीता — पृष्ठ संख्या: 35

18- कैम्पस क्रॉनिकल — पृष्ठ संख्या: 33-44


****************

# प्राचार्य का संदेश

प्रिय छात्र-छात्राओं एवं पाठकों,

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे महाविद्यालय की मासिक पत्रिका "मेधा" का नया अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल संस्थान की शैक्षिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है, बल्कि हमारे युवा विद्यार्थियों के विचारों,भावनाओं और छिपी हुई प्रतिभाओं को उजागर करने का एक सशक्त मंच भी है।

आज के दौर में शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं,बल्कि रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित करना भी है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में छपे लेख, कविताएं एवं रचनात्मक कार्य, आपकी सोच को निखारने में सहायक सिद्ध होंगे और आपको ज्ञान के नए क्षितिज तलाशने की प्रेरणा देंगे।

मैं इस पत्रिका के सम्पादक एवं छात्र-छात्रा सम्पादक मंडल के समर्पण की सराहना करता हूँ, जिन्होंने अल्प समय में इस पत्रिका को एक उत्कृष्ट रूप दिया है। मैं सभी विद्यार्थियों को अधिक से अधिक लिखने और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से महाविद्यालय का नाम रोशन करने के लिए उत्साहवर्धन करता हूँ तथा महाविद्यालय के विकास में छात्र संघ के सहयोग एवं समस्त महाविद्यालय परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(प्रो.अवधेश नारायण सिंह)
प्राचार्य
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रुद्रपुर

# सम्पादक की कलम से

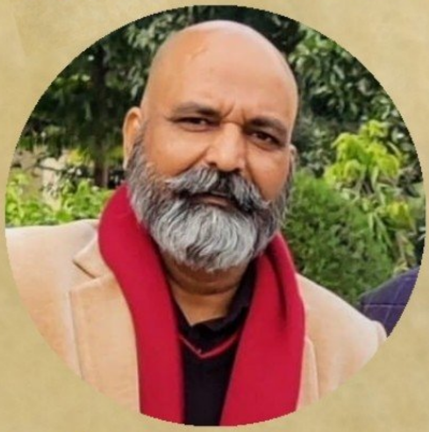

प्रिय विद्यार्थियों, सहयोगी साथियों और पाठकों,

स्वप्न, सृजन और सम्भावनाओं की मासिक पत्रिका "मेधा" का तीसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। यह केवल एक मासिक पत्रिका नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का जीवंत मंच है। एक ऐसा मंच जहाँ विचारों को शब्द मिलते हैं, भावनाओं को दिशा मिलती है और सपनों को नई उड़ान मिलती है। पहले और दूसरे अंक के उत्साहजनक स्वागत के बाद यह तीसरा अंक एक नए आत्मविश्वास और व्यापक दृष्टिकोण के साथ प्रकाशित हो रहा है। यह अंक इस बात का प्रमाण है कि जब युवाओं को अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है, तो वे केवल लिखते ही नहीं, बल्कि समाज, प्रकृति और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझते हुए स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं।

ज्ञान, संवेदना और सृजनशीलता के इस निरंतर प्रवाह में विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि बहुत आश्वस्तिपरक है। विद्यार्थियों की रचनाओं में विविधता, उनकी संवेदना के धरातल के विस्तार का संकेत देती है। हमारी नौजवान चेतना राष्ट्र, समाज और पर्यावरण को लेकर समान रूप से जाग्रत है। इस अंक में प्रकाशित प्रीति मेहरा का लेख 'मेरे सपनों का भारत' और संगीता का लेख 'पेड़ की आखिरी चिट्ठी'- राष्ट्र और पर्यावरण के प्रति हमारे युवाओं की चिंता को उजागर करती है। तनु गोयल की कविता 'They Call Them Non-Living, But Not for Me' प्रकृति के साथ एक बहुत गहन तादात्म्य प्रदर्शित करती है। यह कविता अंग्रेजी के महान कवि William Wordsworth की एक कविता से प्रेरित है। रोज एक से बढ़कर एक बुरी खबरों के माध्यम से दुनिया की एक भयावह छवि गढ़ने में मशगूल समाचार माध्यमों के बीच, अनामिका सिंह की कविता 'मैं नहीं मानती' युवा पीढ़ी की मानवता पर अटूट आस्था को एक नया और उम्मीद भरा आयाम देती है। यह कविता न केवल दहशत, निराशा और विघटन की चलती हुई कहानी को चुनौती देती है, बल्कि उस आंतरिक दृढ़ता को भी उजागर करती है, जो युवा मन में किसी भी गलत बात के प्रति "मैं ऐसा नहीं मानती, मैं ऐसा नहीं मानूँगी" का बलवान आह्वान बन जाती है।

इसी अंक में सालेहा खातून की 'अमिट इबारत' और देवकी की

'सुकून का मलबे से नाता' कविता नहमें आश्वस्त करती है कि युवा पीढ़ी ने भाषा को बिगाड़ने के सोशल मीडिया के तमाम प्रयासों के बावजूद अपने भावों को प्रकट करते समय भाषा पर अपनी सशक्त पकड़ बनाकर रखी है। दुनिया में चल रहे युद्ध को लेकर पूजा पाठक की कविता 'आग और झंडों के बीच', युद्ध की विभीषिका और त्रासदी को एक संवेदनशील मानवीय नजरिए से देखने की कोशिश है। इसके अलावा कुमकुम मिश्रा, कविता, पूजा रस्तोगी, प्रेम विश्वास और अफशा अंजुम की रचनाएँ, इस बात की तस्दीक करती हैं कि हमारे विद्यार्थी अपने आस-पास के परिवेश को लेकर पूरी तरह से जागरूक और जीवन को उसकी समग्रता में देखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस अंक से हमने पूर्व छात्र-छात्राओं की उपलब्धियों और उनकी रचनाएँ प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस क्रम में महाविद्यालय का नाम रोशन करने वाली वाणिज्य संकाय की पूर्व छात्रा मुस्कान चावला की उपलब्धियों से वर्तमान विद्यार्थियों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है। समाजशास्त्र विभाग की पूर्व छात्रा दिव्यांशी यादव ने 'AI and Future of Work: Opportunity or Threat' विषय पर एक सारगर्भित लेख प्रस्तुत किया है।

'मेधा' के सम्पादकीय मंडल की जितनी तारीफ की जाय कम है, लेकिन यहाँ पर विशेष तौर पर सहायक सम्पादक तनीशा चावला का ज़िक्र बेहद जरूरी है। प्रत्येक माह प्रकाशित साक्षात्कार के कॉलम में हम महाविद्यालय से जुड़े किसी प्रेरणादायी व्यक्तित्व का साक्षात्कार प्रकाशित करते हैं। इस अंक में हम भूगोल विभाग के शोधार्थी वीरेंद्र का साक्षात्कार प्रकाशित कर रहे है, जिन्होंने 15 वर्ष तक नौसेना की चुनौतीपूर्ण सेवा के बाद असिस्टेंट प्रोफेसर बनने का सपना पूरा किया है। सहायक सम्पादक तनीशा चावला ने इस साक्षात्कार के लिए जिस स्तर पर तैयारी की, वह पेशेवर पत्रकारों को भी मात देने वाला है। इसी तरह पिछले अंक में नेपोलियन ने भी साक्षात्कार की तैयारी को लेकर मुझे हतप्रभ किया।

महाविद्यालय कैम्पस हमारा दूसरा घर है और इसकी गतिविधियाँ इस घर को जीवंत बनाती हैं। किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पहचान केवल उसकी पढ़ाई से नहीं, बल्कि उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से भी होती है। कैम्पस क्रॉनिकल कॉलम के अंतर्गत महाविद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षणिक गतिविधियाँ, विभिन्न प्रतियोगिताएं, खेलकूद और विद्यार्थियों को उनके सामाजिक सरोकारों से परिचित कराने हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना और रेडक्रास द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के बारे में रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही हैं। यह गतिविधियाँ दर्शाती हैं कि हमारा महाविद्यालय कैम्पस केवल ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का एक जीवंत मंच भी है।

अन्त में आप सभी से अनुरोध है कि अपनी रचनाओं, सुझावों और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से इस ई-मैगज़ीन को और अधिक समृद्ध बनाएँ । आप अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएँ sociosbs@gmail.com पर भेज सकते हैं । आपकी सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

Rajesh 07.03.26

(डॉ.राजेश कुमार सिंह)
सम्पादक "मेधा"

# "नौसेना के जाँबाज़ योद्धा से असिस्टेंट प्रोफेसर तक का शानदार सफर"

आमतौर पर होता यह है कि सेना की नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद लोग बैंक या किसी सुरक्षा एजेंसी में नौकरी तलाश करते हैं या फिर कोई छोटा-मोटा व्यापार या दुकान खोल लेते हैं। लेकिन वीरेन्द्र ने इन सबसे अलग एक नई राह चुनी। भारतीय नौसेना में 15 वर्षों की अपनी शानदार सेवा से 2021 में सेवानिवृत्ति के बाद वीरेन्द्र ने अपने सपनों को एक नई उड़ान देने की सोची। इसी 3 मार्च को हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम से आपने एक नई इबारत लिख दी। अपने सपनों को अमली जामा पहनाकर उन्होंने साबित कर दिया कि आप उम्र के किसी भी पड़ाव पर एक नई शुरुआत कर सकते हैं, बस आपके अन्दर अपना मुक़ाम हासिल करने जज़्बा और जुनून होना चाहिए।

वर्तमान में सरदार भगत सिंह राजकीय महाविद्यालय, रुद्रपुर के भूगोल विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.पूनम शाह के निर्देशन में शोधकार्य कर रहे वीरेन्द्र ने अपनी नौसेना की सेवा के दौरान ही शिक्षक बनने का फैसला कर लिया था। इसी समय 2018 एवं 2019 में उन्होंने लगातार दो बार यूजीसी की जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण की और 2021 में सेवानिवृत्ति के तुरन्त बाद इसी वर्ष डॉ. पूनम शाह के निर्देशन में पीएचडी कोर्स ज्वाइन कर लिया। 2006 में 12 वीं कक्षा पास करने के तुरन्त बाद ही वीरेन्द्र मैट्रिक एंट्री रिक्रूटमेंट (MER) परीक्षा के माध्यम से नौसेना में दाखिल हुए और उन्होंने पेटी ऑफिसर कम्युनिकेशन (POCOM) के पद पर सेवा दी। लेकिन नौसेना की अपनी कठिन और रोमांचक दिनचर्या के बीच भी वीरेन्द्र ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और शिक्षक बनने के अपने सपने की परवरिश करते रहे।

हमारी मासिक पत्रिका "मेधा" की सहायक सम्पादक तनीशा चावला ने इस साक्षात्कार के माध्यम से भारतीय नौसेना के एक सैनिक से उच्च शिक्षा में प्राध्यापक बनने के वीरेन्द्र के इस प्रेरणादायी सफर के उतार-चढ़ाव, उनके संघर्षों और जीवन के छुए-अनछुए पहलुओं को जानने की कोशिश की है। मुझे पूरा यकीन है कि वीरेन्द्र का यह सफरनामा जीवन के विभिन्न संघर्षों और कठिनाइयों से जूझ रहे विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा।

**——सम्पादक**

**तनीशा चावला :** वीरेन्द्र जी, आपको इस शानदार सफलता के लिए बधाई देते हुए हम यह जानना चाहेंगे कि शुरूआत से आपके जीवन का क्या लक्ष्य था, क्या आप भारतीय नौसेना के माध्यम से देश सेवा करना चाहते थे या फिर प्रोफेसर के रूप में देश की शिक्षा व्यवस्था में अपना योगदान देना चाहते थे? आप हमें अपने प्रारम्भिक जीवन के बारे में कुछ बताइए।

**वीरेन्द्र :** मेरा प्रारम्भिक जीवन हरियाणा राज्य के झज्जर जिले में एक छोटे से गांव गोरिया में बीता है। मैं आपको जानकारी के लिए बता दूँ कि पेरिस ओलम्पिक 2024 में शूटिंग चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतने वाली मनु भाकर भी इसी गोरिया गांव की हैं। मैंने हाई स्कूल व इंटर की परीक्षा हरिदास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सलहावास, झज्जर हरियाणा से उत्तीर्ण की है। मेरे पिताजी ने इंडियन आर्मी में एक सैनिक के रूप में देश की सेवा की है, इसी कारण मेरी भी यह हार्दिक इच्छा थी कि मुझे भी जीवन में एक बार आर्मी या नेवी के माध्यम से देश सेवा का अवसर मिले। यदि मैं जीवन के लक्ष्य की बात करूँ तो मैं इतना कहूँगा कि " I am a soldier by blood and professor by thoughts."। मेरे जीवन का सपना हमेशा से एक शिक्षक के रूप में भूमिका निभाने का रहा है, एक शिक्षक के रूप में सेवा देने का आकर्षण मुझे शुरू से ही रहा है।

**तनीशा चावला :** सर, मैं जानना चाहूँगी कि आप भारतीय नौसेना में किस पद पर कार्यरत रहे? और भारतीय नौसेना में आपके द्वारा दी गई गौरवपूर्ण सेवा के उन 15 वर्षों का आपका अनुभव कैसा रहा?

**वीरेन्द्र :** देखिए, इंडियन नेवी में जो मेरी अंतिम रैंक थी, वह एक पेटी ऑफिसर सेलर कम्यु-निकेशन के रूप में थी। मैं 18 साल की उम्र में 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर 2006 में नौसेना में शामिल हुआ था, शायद जिस समय एक छात्र हजारों प्रश्नों से घिरा रहता है, उस समय मैंने भारतीय नौसेना में अपनी यात्रा की शुरुआत की थी। 2006 से 2021 तक मैंने भारतीय नौसेना में 15 वर्षों तक अपनी सेवा प्रदान की, इस दौरान विभिन्न पोर्ट जैसे चिलका, मुंबई, विशाखापट्टनम, कोच्ची में कार्यरत रहा। इसके अलावा मुझे आईएनसी मुंबई में रहते हुए अनेक विदेशी यात्राएं करने का भी अवसर प्राप्त हुआ, जिसके अंतर्गत मैं जापान, वियतनाम, साउथ अफ्रीका, सिंगापुर, मेडागास्कर जैसे पोर्ट पर गया। अपनी नौसेना यात्रा के दौरान मैंने गोताखोरी कोर्स भी किया। मेरे नौसेना के अनेक अनुभव हैं, जो मुझे आज भी रोमांचित करते हैं।

**तनीशा चावला :** वीरेन्द्र जी, आपने भारतीय नौसेना के सफर के दौरान किन चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना किया?

**वीरेन्द्र :** भारतीय नौसेना निस्संदेह एक बहुत ही कठिन क्षेत्र है। विश्व के सात महासागरों में छोटे और बड़े जहाज में काम करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण होता है। समुद्र की ऊँची लहरों के कारण जहाज के लगातार हिलने से जी मिचलाना और उल्टी जैसी समस्याएं होती हैं, जिससे काम करना मुश्किल हो जाता है। जहाज के अंदर रहने और सोने की जगह बहुत कम होती है। प्राइवेसी लगभग न के बराबर होती है। पीने के पानी को जहाज पर ही फिल्टर किया जाता है, इसलिए पानी का उपयोग बहुत ही सोच समझ कर किया जाता

है। जैसे 2016 में जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध का माहौल था, उस समय भारतीय नौसेना ने एक बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी, उस समय अनेक बार तो ऐसा हुआ कि हमें 24 घंटे तैनात रहना पड़ता था। क्योंकि युद्ध जैसी स्थिति में मिसाइल अटैक, ड्रोन हमले या टॉरपीडो का डर बना रहता है, जिसके लिए उन्हें 24 घंटे हाई अलर्ट पर रहना पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद भी, रोमांच बना रहता है। देश सेवा के प्रति जुनून, और यह भावना कि पूरा देश हमारे कारण ही सुरक्षित महसूस कर रहा है, हमें उन चुनौतीपूर्ण स्थितियों में भी धैर्य और साहस के साथ काम करने की क्षमता प्रदान करता है।

**तनीशा चावला :** भारतीय नौसेना में एक सैनिक से उच्च शिक्षा में असिस्टेंट प्रोफेसर तक का यह सफर आपके जीवन के लिए एक नए अध्याय के समान है। एक नौसैनिक के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद एक नए सिरे से जीवन की शुरुआत करना, निस्संदेह एक बहुत संघर्षपूर्ण व साहसिक कार्य रहा होगा। सर, मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि वह क्या प्रेरणा रही जिसने आपको नौसेना जैसी चुनौतीपूर्ण सेवा के बाद दोबारा शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखने की शक्ति प्रदान की?

**वीरेन्द्र :** मैं सबसे पहले इसके लिए भारतीय नौसेना का सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे भीतर जो अनुशासन, धैर्य, निष्ठा व अनेक विशेषतायें उजागर हुईं, जिन्होंने मुझे शोधकार्य करने और असिस्टेंट प्रोफेसर का पद प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वह सब भारतीय नौसेना की ही देन है। जैसा कि मैंने आपसे कहा कि मेरा स्वप्न एक शिक्षक की भूमिका निभाने का रहा है, तो भारतीय नौसेना की यात्रा के दौरान मुझे जितना समय मिल पाता था, वह समय मैं असिस्टेंट प्रोफेसर बनने की दिशा में, उस प्रक्रिया हेतु समर्पित कर देता था। मैंने अपनी उच्च शिक्षा भी इसी ड्यूटी के दौरान प्राप्त की है। मैंने 2010 में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से अपनी स्नातक की उपाधि प्राप्त की व 2016 में वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कोटा,राजस्थान से भूगोल में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। मैंने इसी दौरान दो बार 2018 एवं 2019 में जेआरएफ की परीक्षा उत्तीर्ण की। 2021 में मुझे कुमायूँ

विश्वविद्यालय के अंतर्गत सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में भूगोल विज्ञान विभाग में डॉ. पूनम शाह मैडम के मार्गदर्शन में शोधार्थी के रूप में शोध करने का मौका मिला।

**तनीशा चावला :** सर, आपने अपनी पढ़ाई और अपनी नौकरी को किस तरह संतुलित किया? आपने किस प्रकार अपनी पढ़ाई के लिए समय निकाला?

**वीरेन्द्र :** देखिए जब हम अपने लक्ष्य को निर्धारित करते हैं और उस ओर कदम बढ़ाते हैं, तो भीतर से ही एक शक्ति आती है, जो हमें उस ओर आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। मेरी मानिये तो प्रत्येक व्यक्ति में सूरज जितना ताप होता है, यदि हम लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्पित होते हैं, तो हमारे सामने समय की पाबंदियां कम होती जाती हैं। आपके पास जितना सीमित समय होता है, उसमें ही बहुत उत्पादक कार्य होने लगते हैं । मैंने तो एक समय पर अनुभव किया कि जैसे मैं एक ही साथ तीन-तीन जिंदगियां जी रहा हूँ। मैं नौसेना में 2017 से 2021 तक HQMC के मुख्यालय में कार्यरत था, तब वहाँ सुबह 9:00 से शाम के 5:00 बजे तक मैं मुख्यालय में कार्य करता था, उसके बाद 4 घंटे मैं लाइब्रेरी में अपने सपने को पूरा करने के लिए पढ़ता था।

**तनीशा चावला :** अंतः अस्ति प्रारम्भः अर्थात अंत ही प्रारम्भ है । सर, जीवन के इस नए अध्याय के प्रारम्भ में किन लोगों का योगदान आपको प्राप्त हुआ?

**वीरेन्द्र :** जैसा कि मैंने कहा कि सबसे पहले तो मैं भारतीय नौसेना को ही धन्यवाद देता हूँ। क्योंकि भारतीय नौसेना ने मुझे एक ऐसा माहौल दिया, जिसमें व्यक्ति के मन में हमेशा यही विचार रहता है कि "जिंदगी जब अभी चल रही है, तो हम कैसे रुक जाएँ? मेरे माता-पिता ने मुझे हमेशा पढ़ने के लिए प्रेरित किया। साथ ही मेरे जीवन साथी ने मुझे इस नए सफ़र में हमेशा प्रोत्साहित किया। मेरी शोध निर्देशक डॉ. पूनम शाह मैडम, जिन्होंने मुझे एक माँ की भाँति, एक दोस्त की तरह मार्गदर्शन दिया, मैं जहाँ भी असमंजस में पड़ा, उन्होंने मुझे समझाया। मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे जीवन के इस नए सफर में आगे बढ़ने में सहयोग दिया।

**तनीशा चावला :** सर, आपने जिस समय, जिस उम्र में यह उपलब्धि, यह उत्कृष्टता हासिल की है, हमने सामान्यतः इस उम्र के बहुत से लोगों को निराश होते देखा है। उन्हें लगता है कि अब हम क्या ही कर सकते हैं? क्या इस प्रकार के नकारात्मक विचार कभी आपके मन-मस्तिष्क में आये, जिसने आपको आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया या आपको भावनात्मक रूप से कमजोर करने की कोशिश की हो?

**वीरेन्द्र :** मैं बड़ी उम्र को अनुभव की अधिकता के रूप में देखता हूँ, मेरा मानना है कि यदि मेरी उम्र अधिक है तो मैं उन सभी युवाओं से अधिक ज्ञानवान हो सकता हूँ, जो अभी इस क्षेत्र में नए है। मैंने उम्र को सदैव सकारात्मक रूप में देखा है। मैंने जब जेआरएफ की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, तो उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में, मैं सबसे अधिक उम्र का व्यक्ति था।

**तनीशा चावला :** वीरेन्द्र जी, आज आप एक शोधार्थी के रूप में कैसा महसूस कर रहे हैं? यह यात्रा भारतीय नौसेना से किस प्रकार भिन्न है?

**वीरेन्द्र :** देखिए भारतीय नौसेना व शिक्षा का यह क्षेत्र दोनों ही पारस्परिक रूप से बहुत भिन्न है, चाहे फिर वह परीक्षा की तैयारी के विषय में हो या कार्यशैली के आधार पर। पर मैं इतना कहूँगा, कि आप जिस भी क्षेत्र में हैं, वहाँ पूरे समर्पण से कार्य कीजिए। कार्य में संतुष्ट होना ज्यादा जरूरी है। आप जिस भी क्षेत्र में कार्यरत हैं, वहाँ पूर्ण ईमानदारी व निष्ठा से अपने कर्तव्यों को निभाना अति आवश्यक है।

**तनीशा चावला :** आपके शोधकार्य का टॉपिक क्या है?

**वीरेन्द्र :** मेरे शोध कार्य का विषय हैं - "Impact of Climate Change on Southern Agro-Climatic Zone of Haryana"। इसके अंतर्गत मैंने महेंद्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों में अपना शोध कार्य किया है।

**तनीशा चावला :** वीरेन्द्र जी, पीएच.डी. एक उच्च स्तरीय और लम्बी अवधि का कोर्स है। आपने एक लम्बे समय तक अध्ययन के दौरान निरंतर धैर्य बनाए रखा और यदि मैं गलत नहीं हूँ, तो आपको इसकी बहुत हद तक आवश्यकता भी नहीं थी। मैं समझना चाहती हूँ कि इसके बावजूद यह किस प्रकार सम्भव हो सका?

**वीरेन्द्र :** जी हाँ, मुझे इसकी बहुत हद तक आवश्यकता नहीं थी। यदि मैं शोधकार्य और असिस्टेंट प्रोफेसर की तैयारी न भी करता, तो भी मैं किसी और माध्यम से अपना जीवन यापन कर सकता था। परंतु ये सपना था मेरी माँ का, जो अधिक पढ़ी-लिखी नही हैं, पर वे चाहती थीं कि उनका बेटा उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता हासिल करे। मेरी भी इच्छा थी कि मैं कृषि क्षेत्र में शोध कर समाज के लिए कुछ बेहतर कर सकूँ। जब नीयत साफ होती है और उद्देश्य अच्छे होते हैं, तो सब कुछ साकार हो जाता है। एक रूप में कहूँ तो मुझे इस उपाधि की अनकंडीशनली चाहत थी।

**तनीशा चावला :** सर आप हमारी इस मासिक पत्रिका "मेधा" के माध्यम से युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे?

**वीरेन्द्र :** देखिए युवाओं में कार्य करने की क्षमता बहुत अधिक होती है। वह ऊर्जा और उत्साह से भरे रहते हैं, पर आज के समय में वह पढ़ने के प्रति ईमानदारी नहीं दिखा रहे हैं। वे अपने जीवन में भटके हुए हैं। आज इस बात की जरूरत है कि युवा अपनी ऊर्जा को सही कार्य में लगाएं, मैं युवाओं को यही संदेश देना चाहूँगा कि लगन और कठिन परिश्रम, अनुशासन, एकाग्रता व कार्य में निरंतरता ही जीवन में सफलता की कुंजी हैं।

**तनीशा चावला :** सर एक संवेदनशील प्रश्न है। यदि आपके स्थान पर एक महिला होती और उसे आपकी ही भाँति अपने जीवन की एक नई शुरुआत करनी होती, तो उसे किस प्रकार की समस्याओं का, चुनौतियों का सामना करना पड़ता, जिससे शायद आप अछूते रह गए होंगे?

**वीरेन्द्र :** बिल्कुल, यदि इस स्थिति में एक महिला होती तो निस्संदेह उसे बहुत सी कठिनाइयों और समस्याओं से लड़ना पड़ता। शायद परिवार का, समाज का इतना समर्थन उसे नहीं मिल पाता, जितना समर्थन और सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। इसमें कहीं ना कहीं समाज का ही दोष है, समाज को अपनी विचारधारा को बदलना होगा। कुछ हद तक तो हम आधुनिकता की ओर अग्रसर हैं और महिलाएं अनेक क्षेत्रों में आगे भी बढ़ रही है, परंतु अभी भी बहुत से क्षेत्रों में सुधार होने बाकी हैं।

**तनीशा चावला :** सर, एक अंतिम प्रश्न..आपके जीवन में भारतीय नौसेना व शिक्षा के क्षेत्र-दोनों में ही आपके आदर्श कौन रहे हैं?

**वीरेन्द्र :** भारतीय नौसेना में कैप्टन रोहित शर्मा जी सदैव से ही मेरे आदर्श रहे। यह वही कैप्टन हैं, जिन्होंने ताज होटल अटैक के समय एक नेवी मार्को टीम का नेतृत्व किया था। मैं स्वयं को बहुत अधिक सौभाग्यशाली महसूस करता हूँ कि मैंने 2 साल तक कैप्टन रोहित शर्मा जी के साथ कार्य किया, मैं उनके कार्य करने के तौर-तरीके से बहुत अधिक प्रभावित हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में हाई-स्कूल के मेरे शिक्षक कमलजीत सर रहे, 12वीं की कक्षा में जोगेंद्र अहलावत सर, उच्च शिक्षा में डॉ. पूनम शाह गंगोला मैम, तीनों ही शिक्षकों में एक बात खास थी कि वह सभी अपने काम के प्रति बहुत ही निष्ठावान हैं और उन्होंने सदैव अपने काम को ही प्राथमिकता दी है। अपने शिक्षण कार्य के दौरान आनंदित होते हैं और पूर्ण रूप से मगन होकर उस कार्य को करते हैं। मैं भी चाहता हूँ कि जब मैं एक शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाऊँ, तो मैं भी उसे तन्मयता और समर्पण के साथ कार्य करूँ।

**तनीशा चावला :** धन्यवाद वीरेन्द्र जी, हम "मेधा" पत्रिका की समस्त सम्पादकीय टीम की ओर से आपका हृदय से आभार और जीवन की नई पारी के लिए शुभकामना व्यक्त करते हैं।

********************

Alumnae Corner

# महाविद्यालय के अनमोल सितारे : मुस्कान चावला

संसद के केंद्रीय कक्ष में भाषण देती मुस्कान चावला : 25.12.2022

महाविद्यालय के लिए वह गौरव का क्षण था जब भारत की संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में महाविद्यालय की एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा मुस्कान चावला द्वारा 25 दिसंबर 2022 को भाषण दिया गया । यह भाषण मुस्कान चावला द्वारा भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व करते हुए दिया गया । मुस्कान चावला ने लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, अन्य मंत्रियों व सांसदों के समक्ष मालवीय जी की जीवनी व उनकी विचारधारा पर अपना भाषण प्रस्तुत किया । देश के 25 में से केवल 8 राज्यों का ही चयन इस प्रस्तुतीकरण के लिए हुआ था ।

इसके पूर्व मुस्कान चावला ने 2020 में राष्ट्रीय युवा भाषण प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया था । 2024 में नासिक, महाराष्ट्र में आयोजित हुए 27वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव में मुस्कान चावला ने उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व किया । 2025 में मुस्कान चावला ने उत्तराखंड की राज्य विधानसभा में ऊधम सिंह नगर जिले का प्रतिनिधित्व कर भाषण दिया । 2025 में मुस्कान चावला को कुमाऊं केसरी के देवभूमि आइकॉन अवार्ड से सम्मानित किया गया । गदरपुर निवासी श्री राजकुमार चावला एवं श्रीमती रेखा रानी चावला की पुत्री मुस्कान चावला आज भी माई भारत की एक स्वयंसेवी के रूप में महाविद्यालय से जुड़ी हुई हैं ।

***************

Alumnae Corner

# AI and the Future of Work
## Opportunity or Threat?

Divyanshi Yadav
Department of Sociology

Artificial Intelligence (AI) is one of the most powerful innovations of the 21st century. From smart-phones to classrooms and industries, it is changing the way we live and work. With this rapid advancement, a common fear has emerged: Will AI take our jobs? This question reflects both anxiety and curiosity. While some believe machines will replace humans, others argue that AI will open new doors. As Stephen Hawking once said, "Intelligence is the ability to adapt to change."

This reminds us that the real issue is not AI itself, but how we respond to it. AI refers to machines that can perform tasks requiring human intelligence, such as learning, reasoning, and decision-making. Today, AI is not just a tool, it is becoming a collaborator in many professions. Instead of completely replacing humans, AI is mainly changing the nature of work. It is automating routine tasks, assisting professionals and even creating new industries. AI is most effective in tasks that are repetitive and predictable. As a result, certain jobs are more vulnerable.

### Jobs Likely to Be Affected by AI

| Sector | Examples of Jobs | Reason |
|---|---|---|
| Manufacturing | Factory workers | Repetitive physical work |
| Customer Service | Call center agents | Chatbots handle queries |
| Retail | Cashiers | Self-checkout systems |
| Data Entry | Clerks | Automated data processing |

However, it is important to note that AI replaces tasks, not entire professions.

## Jobs That Will Continue to Thrive

Human qualities like creativity, empathy, and ethical judgment cannot be easily replicated by machines. Therefore, many professions remain secure.

### Jobs Less Likely to Be Replaced

| Field | Examples | Key Human Skill |
|---|---|---|
| Education | Teachers | Emotional connection |
| Healthcare | Doctors, nurses | Human judgment |
| Creative Arts | Writers, artists | Creativity |
| Social Work | Counselors | Empathy |

As Albert Einstein wisely said, "The true sign of intelligence is not knowledge but imagination." This highlights the importance of human creativity in an AI-driven world.

## AI as a Job Creator

History shows that every technological revolution creates new opportunities. Similarly, AI is generating new career paths such as:

- AI engineers
- Data scientists
- Robotics experts
- AI ethics specialists

These roles did not exist a few decades ago. This proves that AI is not just a job destroyer—it is also a job creator.

Despite its benefits, AI brings serious challenges:

- Unemployment in low-skill sectors
- Skill gap, as workers may not be trained for new roles
- Economic inequality, where benefits are unevenly distributed
- Ethical issues, such as bias in AI systems

These challenges require careful planning, education, and policy-making. The future of work is not about humans versus machines, but about collaboration. AI can process data quickly and accurately, while humans bring creativity, values, and emotional understanding.

As Sundar Pichai, CEO of Google, said, "AI is probably the most important thing humanity has ever worked on." This shows the immense potential of AI—but also the responsibility to use it wisely. Rather than fearing AI, we should prepare for it. Because in the end, the future belongs not to those who resist change, but to those who learn to work with it.

****************************

# Union Of Hearts

Tannu Goyal
B.A. 4th Semester

I'm a word from the moon,
You're a poem from the lunar light.
I'm a blank page,
You're a book with stories to ignite.
I'm black ink,
You're colors that blend and play.
I'm a fleeting moment,
You're an eternal day.
I'm the breeze of December's chill,
You're the warmth of April's gentle ray.
I'm a whispered secret,
You're a love that's here to stay.
I'm a drop of dew on grass so fine,
You're the sunrise that makes it shine.
I'm a single note in harmony,
You're the melody that's music to me.
I'm a spark in the dark of night,
You're the star that shines with all your might.
I'm a gentle stream that flows and winds,
You're the ocean where my waters find.
I'm a thought that's yet to be told,
You're the story that's forever to hold.
I'm a brushstroke on a canvas wide,
You're the masterpiece that my art cannot hide.

****************

# They Call Them Non-Living, But Not for Me

(In the Spirit of Wordsworth)

Tannu Goyal
B.A. 4th Semester

The most beautiful thing is sitting under the sky.
You know... I always sit under the sky once a day,
So that I can give myself
At least a little time – just me.

This moment feels so restful, so still,
As if time itself slows down to breathe.
Because I talk to the sky,
And it listens to me every single day
Without judgment, without questions, without noise.

They say all these things – the sky, the moon, the stars,
The trees, the mountains, the flowers
Are non-living.
They don't have feelings.
But for me?
They're more alive than people.

They live together in quiet harmony,
They don't judge each other,
They help each other,
They stay...
No matter what happens.
Always loyal. Always moral.
Always there.

But humans?
Humans speak soft promises
"We'll stay." "We're with you."
And then they leave
Like fallen leaves in an uncaring wind.

For me, it's the opposite.
People are the non-living ones.
Because what's the use of a heart
If it doesn't feel?

Nature is still the same.
The sky still listens.
The moon still shines.
The tree still gives shade.
But humans?
Humans always change.

That's why I sit under the sky
To be with those who stay.
To find peace in things they call silent,
But to me... they speak the loudest.

They hold me gently,
The way humans never could.
Their silence is more comforting
Than a thousand empty words.

*****************

# अमिट इबारत

सालेहा खातून
बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

एक ख्वाब जो अपनी चश्म-ए-तर से देखा था मैंने,
उस ख्वाब में खुद को मुकम्मल पाया था मैंने,
जमाने ने चाहा कि मेरे हौसले पस्त हो जाएं,
पर अपनी फतह का मंजर खुद लिखा था मैंने,
सताइश के हाथ भी बढ़े थे मुझे बहकाने को,
पर अपनी बुनियाद को संग-सा मजबूत बनाया था मैंने।
दुनिया की बंदिशों ने घेरा था मुझे हर सिम्त से,
पर अपनी रूह को इन जंजीरों से आज़ाद किया था मैंने।
'लोग क्या कहेंगे'- इस वहम को जेहन से निकालकर,
अपनी शख्सियत को खुद से बुलन्द बनाया था मैंने।
राहों में काँटे और पत्थर तो बहुत बिछाए गए मेरे,
पर उन आज़माइशों को भी मुस्कुराकर गुजारा था मैंने।
वो चाहते हैं कि मेरी हस्ती मिटा दी जाए,
पर मैं वो इबारत हूँ, जिसका मिटना मुमकिन नहीं।

***************

# मैं नहीं मानती..

अनामिका सिंह
बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

नहीं
ये दुनिया इतनी बुरी नहीं हो सकती है..!!
ये बातें झूठी बातें हैं
जो लोगों ने फैलाई हैं..

"मैं नहीं मानती।"
मैं नहीं मानती कि ये दुनिया इतनी बुरी हो चुकी है..
मैं नहीं मानती कि हर चेहरा दोषी है..
मैं नहीं मानती कि हर दिन
जो हमारे सामने परोसा जाता है,
वही अंतिम सत्य है..

नहीं..!
यह झूठी खबरें हैं,
यह गढ़ी हुई कहानियाँ हैं,
यह भय बेचने का कारोबार है,
टीवी और इंटरनेट पर दिख रहा सबकुछ सच नहीं है..

हाँ, मैं देखती हूँ..
जब कहीं हिंसा होती है,
जब किसी बेगुनाह की आवाज़ दबा दी जाती है,
जब नफरत के नाम पर इंसानियत हारती है
तो दिल पूछता है
क्या सच में दुनिया इतनी बुरी हो गई है...?

लेकिन उसी दुनिया में
एक अजनबी
भूखे को खाना भी खिलाता है,
एक डॉक्टर
रात भर जागकर किसी की जान बचाता है,
एक लड़की
अपने सपनों के लिए समाज से लड़ती है,
और कोई बिना नाम चाहे
चुपचाप सही काम करता है।
तो फिर सच कौन सा है?

मैं नहीं मानती
कि दुनिया सचमुच इतनी बुरी हो सकती है..!!
क्योंकि अगर बुराई दिखती है,
तो अच्छाई भी
कहीं न कहीं खड़ी होती है
बस शोर कम करती है..

मैं मानती हूँ
कि आज भी लोग हैं जो सच्चाई के साथ हैं..
मैं मानती हूँ
कि इंसानियत आज भी जिंदा है..
मैं मानती हूँ
कि सच आज भी मौजूद है..
मैं मानती हूँ
कि सच के लिए लड़ने वाले
आज भी एक हकीकत हैं..

ये झूठ का भरम,
ये फरेब की कहानियाँ
ये अकेला, इकलौता सच नहीं है..
इससे आगे भी कुछ है
जिसकी वजह से ये कायनात कायम है..

पर उसे बचाने के लिए आवाज़ उठानी होगी,
चुप रहकर सच नहीं बचता,
उसे बोलना पड़ता है,
जीना पड़ता है..

यदि हम
सच को पहचानने की आदत डाल लें,
तो झूठ की
हर दीवार गिर सकती है।

और शायद
इसी विश्वास के साथ
आज, यहीं, अभी
एक नई शुरुआत हो सकती है।

"मैं नहीं मानती।"
क्योंकि मैं जानती हूँ..
क्योंकि मैं सोचती हूँ..
और जो सोचता है,
वही सच में आज़ाद है..!!

************

# सुकून का मलबे से नाता

देवकी
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

थी वो
एक मुकम्मल नज़्म,
सुकून के कागज़ पर लिखी हुई।
एक बेपरवाह कली,
जो थी सिर्फ़
अपनी ही खुशबू में बसी हुई।
पर वक्त की स्याही ने,
अचानक अपना रुख बदल लिया।
ले गया वह उसे
उस दहलीज़ पर,
जहाँ हर साँस ने उसका दम लिया।
वो टूटी...
जैसे काँच का कोई ख़्वाब टूटे
वो बिखरी...
जैसे हाथों से कोई रेत छूटे
उसकी मासूम रुह के,
कंकड़ों की तरह टुकड़े किये गए।
हँसती हुई उस कली से,
जिंदगी के
सारे मायने ले लिए गए।

जब खत्म हो गई वो खुद,
तो उसने
एक आखिरी दस्तखत किया।
अपने ही अरमानों के मलबे पर,
उसने अपनी ही लाश का मंज़र लिखा।
जाते-जाते हवाओं में,
एक जहरीली सरसराहट छोड़ गई..!!
"I hate life...
I hate you people...
and
I hate me"
सोचो..!!
उस आईने ने,
कितने सितम सहे होंगे..
जब उसने अपने ही अक्स को
अजनबी बनते देखा होगा।
जो लड़की खुद की ही धूप थी,
आज खुद ही का साया बन गई..
उसका वो सुकून...
अब सिर्फ़ एक टूटी हुई,
अधूरी कहानी बन के रह गई...

**********

# आग और झंडों के बीच

पूजा पाठक
बी.बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

आग और झंडों के बीच खड़े,
सिर्फ सिपाही नहीं — टूटे पड़े।
सन्नाटे में चीखती हर रात,
डर से सहमे छोटे से हाथ।

समंदर पार फैसले होते,
चुप कमरों में रिश्ते खोते।
बातें बड़ी, पर दिल लाचार,
ताकत का खेल — सब पर भार।

एक माँ दरवाज़े पर ठहरी,
आहट जिसकी अब तक ठहरी।
कदमों की आवाज़ न आए,
आँखें फिर भी राह न छोड़े।

झंडा ऊँचा, भाषण ज़ोर,
फिर भी रहता दिल में चोर।
हर लड़ाई घाव दे जाती,
ज़िंदगी को दर्द सिखाती।

काश शांति कुछ कह पाती,
सबको जीने का हक दिलाती।
ना ताज बड़ा, ना कोई जीत—
हर जंग में होती है, हार की रीत।

# कमजोर थोड़ी न हूँ मैं

कविता
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

नारी हूँ तो क्या हुआ,
कमजोर थोड़ी न हूँ 'मैं'
हाथ में चूड़ियाँ हैं, तो क्या हुआ.. ?
किसी से डरती थोड़ी न हूँ मैं
सीधी हूँ तो क्या हुआ..?
अपने आत्मसम्मान के लिए
लड़ूँगी नहीं क्या मैं..?
चुप रहूँगी क्या मैं..?
सब सहती रहूँगी क्या मैं..?
कुछ नहीं कहूँगी क्या मैं..?
जो लोग कहते हैं -
चुप रहो, शान्त रहो,
सब कुछ सहते रहो, कुछ मत कहो..
ये आत्मसम्मान कुछ नहीं होता,
ये सिर्फ तुम्हारी आँखों का एक धोखा है...
उन लोगों से जाकर बोलो,
क्यों देते हो तुम भ्रष्टाचार को बढ़ावा..?
क्यों चुप रहने की,
सब कुछ सहने की ?
सलाह देते हो तुम नारी को....??

जागो, लोगों जागो,
अपने आँखों की पट्टियों को खोलो तुम
अंधेरे में हो तुम,
उजाले में भागो तुम,
कर अपने मन के गंदे विचारों को खत्म,
सच्चाई को जानो तुम,
बनो हौसला नारी का,
उसके मनोबल को बढ़ाओ तुम,
नारी को समझो तुम,
वो देवी है,
वो ही जग की माता है,
वो ही असुरों का नाश करने वाली काली है..
देवी का अगर करते सम्मान तो,
नारी को भी पूजो तुम
क्योंकि नारी भी ये कहती है
नारी हूँ, तो क्या हुआ...?
कमजोर थोड़ी न हूँ मैं...

************

# मेरे सपनों का भारत

प्रीति मेहरा
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

एक दिन मैं अपने दादाजी के साथ बाहर घूमने गई थी। बहुत ही सुंदर मौसम हो रहा था। थोड़ी दूर जाते ही देखा कि कुछ लोग आपस में लड़ रहे थे। हम गए और देखा, वह लोग जाति-धर्म को लेकर लड़ रहे थे। मेरे दादाजी मुझे वहाँ से ले आए। मैंने अपने दादाजी से पूछा यह लोग लड़ क्यों रहे थे? हिंदू मुस्लिम अलग-अलग हैं क्या? या फिर नीची जाति के लोग ?तो दादा जी बोले कि कोई अलग नहीं है। सब एक समान हैं। भगवान ने सभी को एक समान बनाया है। अगर अलग-अलग होते तो अल्लाह के बंदे अलग दिखते और भगवान के अलग, पर ऐसा नहीं है। जैसा हम आपको अलग-अलग नाम से बुलाते हैं, वैसे ही वह भी हैं। बस नाम अलग हैं, बाकी सब एक ही हैं।

मैने दादा जी से पूछा कि सच में भारत कैसा होना चाहिए? आपके सपनों का भारत कैसा है? दादा जी मुस्कुराए और बोले मेरे सपनों का भारत ऐसा हो, जहां हर किसी के दिल में प्यार बसा हो, कोई भी गरीब भूखा ना सोए, ना ही कोई उदास हो। हर चेहरे पर एक खास मुस्कान हो, जहाँ खुशियों का उजियारा हो, हर घर में खुशियाँ ही खुशियाँ हो। न भेदभाव की दीवारें हो, न धर्म की जंजीरें। मेहनत, सच्चाई और सम्मान से ही हो मेरे भारत की पहचान, ऐसा ही बने मेरा हिंदुस्तान। दादाजी की बात सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गई।

उसी रात मैंने एक सपना देखा जहाँ हर बच्चा, चाहे अमीर हो या गरीब- अच्छी शिक्षा ले रहा है। शिक्षा केवल बच्चों को डिग्री देने के लिए नहीं, बल्कि अच्छी सोच और संस्कार भी सिखा रही है। जहाँ जाति, धर्म और लिंग को लेकर कोई भी भेदभाव नहीं किया जा रहा है। सभी को समान अधिकार प्राप्त है। जहाँ युवाओं को उनके हुनर के दम पर काम मिल रहा है। उन्हें देश छोड़कर बाहर काम के लिए नहीं जाना पड़ रहा। यहाँ सड़कें साफ, हवा शुद्ध और प्रकृति का ध्यान रखा जा रहा है। सबसे जरूरी महिला-ओं को समान अधिकार मिल रहा है और वह केवल घर के ही काम नहीं, बल्कि बाहर के काम भी करती हैं। बिना डरे कही भी आ जा सकती हैं। यहाँ हर महिला सुरक्षित है। इसमें Unity in Diversity केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत के हर नागरिक के दिल में सच में है। यहाँ विज्ञान हर घर, हर गाँव तक पहुंच गया है और देश दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। हर कर्मचारी अपना काम ईमानदारी, मेहनत और लगन से कर रहा है। कोई भ्रष्टाचार भी नहीं हो रहा है। हर काम बिना रिश्वत के ईमानदारी से हो रहा है। हर कोई मिलजुल कर रह रहा है। सभी में भाईचारे का भाव है। लोगों के मन में "मैं" की नहीं "हम" की भावना है।

अचानक मेरा सपना टूटा मैंने देखा कि यह सिर्फ सपना था। पर मुझे बहुत खुशी हुई, मैं भागती हुई अपने दादाजी के पास गई और उन्हें बताया कि मैंने आज अपने सपनों का भारत देखा, जो काफी अच्छा था। दादाजी भी खुश हुए, पर उनके चेहरे पर एक मायूसी थी। मैंने पूछा क्या हुआ ? तो दादा जी बोले- ऐसा भारत होता तो कितना अच्छा होता..!!दादाजी ने मुझे समझाया और बोले कि यह सिर्फ तेरा सपना नहीं, बल्कि भारत के अनेक नागरिकों का सपना है। अगर हर कोई समानता से रहे और ईमानदारी से काम करे, तो सच में भारत वैसा ही होगा, जैसा तुमने सपने में देखा था। उसी दिन से मैंने सोचा कि मैं पढ़ लिखकर एक ईमानदार इंसान बनूँगी और अपने देश को बेहतर बनाने में पूरा-पूरा योगदान दूँगी, तभी पूरा होगा "मेरे सपनों का भारत" का सपना ।

यही है मेरे सपनों का भारत- जो वीरों की धरती है, जहाँ संतों का ज्ञान है और संस्कृति और सभ्यता इसकी पहचान है। जहाँ हर दिल में बसता है तिरंगे का सम्मान, सच में सबसे प्यारा है, मेरा भारत महान ।

*************

# जीवन की डोर


अफशा अंजुम
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, इतिहास


*चाहे जितना हो परिस्थितियों का शोर, मुस्कुराकर थामों तुम जीवन की डोर।*

*आएगा एक दिन वह वक्त भी जरूर, होगा जब आप पर अपनों को गुरूर।*
*साध के अपना लक्ष्य चलो डगर डगर, हो कोई साथ या ना मगर ।*
*मुश्किल बहुत है समय का जोर, मुस्कुराकर थामों तुम जीवन की डोर ।।*

*यूं तो है जिंदगी बहुत क़ीमती, हमको चलती सपनों में बुनती ।*
*हर नई सुबह यह याद दिलाती, अभी तो बहुत कुछ करना है बाकी ।*

*ना चलेगा अब, परिस्थितियों का ज़ोर, मुस्कुराकर थामो तुम जीवन की डोर ।*
*चाहे जितना हो परिस्थितियों का शोर, मुस्कुराकर थामो तुम जीवन की डोर ।।*

*************

# कॉलेज का वो पहला दिन

कुमकुम मिश्रा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, राजनीति विज्ञान

कॉलेज का वो पहला दिन; अपनो से दूर एक अंजान शहर, एक नए राज्य में, नए सफ़र की शुरुआत करना काफ़ी मुश्किल सा था । एक बिल्कुल अंजान शहर में, लाखों लोगों में से एक अच्छा ईमानदार व्यक्ति ढूँढ़ पाना काफ़ी कठिनाई का काम था।

कॉलेज का वो पहला दिन; जहाँ मैं किसी को नहीं जानती थी; सबसे अंजान, कहीं ना कहीं ज़िंदगी की नई शुरुआत के लिए उत्सुक, तो कहीं निराशा भी थी। लेकिन अंजान शहर में आकर मैं अपने आदर्शपुरुष या ये कहूँ कि अपने "आइडल" से मिली, जिन्होंने मेरी हर अच्छे-बुरे वक्त में सहायता की और मुझे संघर्ष करना सिखाया। आज भी जब में अपने आइडल से मिलती हूँ तो उत्साहित हो जाती हूँ । एक अजनबी जगह पर किसी पर इतना भरोसा कर पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था । लेकिन वे एकमात्र ऐसे इंसान थे, जिन्होंने मेरी हर वक्त मदद की ।

धीरे–धीरे समय बीतता गया और कब हँसी–खुशी ग्रेजुएशन के तीन साल बीत गए पता ना चला । अपने करीबी प्रोफेसर्स की मदद से एवं उनके सहयोग से हर मुश्किल परिस्थिति का सामना करना सीख पायी । इन तीन सालों में मैंने बहुत कुछ सीखा समझा । जहाँ शुरुआती दौर में अजनबी शहर में सबसे अंजान थी ; वहीं आज सभी अपने से लगते हैं । कॉलेज लाईफ ने मुझे बाहरी दुनिया का अहसास करवाया । यहाँ अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोग देखने को मिलते हैं । कुछ बुरे लोगों में से हमें अच्छे, ईमानदार लोग तलाशने में दिक्कत जरूर हुई, लेकिन हो गया । अच्छे लोग वो थे जिन्होंने मुझे मोटिवेट किया, आगे बढ़ने की सलाह दी । सब ठीक हो जाएगा, का आश्वासन दिया । इन्हीं अच्छे लोगों की श्रेणी में आते हैं हमारे प्रोफेसर्स, कैंटीन में परिश्रम करती महिलाएँ, जो सबकी जरूरतों का ध्यान रखती हैं एवं वह अन्य कर्मचारी जो हमारे महाविद्यालय के वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं । मैं हर सुबह कॉलेज आकर उन सभी से मिलती हूँ; जो कॉलेज को स्वच्छ बनाते हैं। इन सभी लोगों का काफ़ी बड़ा योगदान रहा हैं।

देखते-देखते कब ये समय व्यतीत हो गया पता ना चला । वो हमारे अध्यापकों का क्लास में लेक्चर देना, कुछ वाद–विवाद, तो कुछ हँसी मज़ाक, कैंटीन में समय व्यतीत करते छात्र–छात्राएँ, अनेक मुद्दों पर चर्चा करते हुए एवं वो कॉलेज की लाइब्रेरी जहाँ शांतिपूर्वक एकाग्रमन से पढ़ाई कर सकते हैं; यह सभी दृश्य काफ़ी मनमोहक हैं । इन सभी यादों की तस्वीरों को सब छात्र–छात्राएँ संजोकर रखते हैं ।

अतः "ज़िंदगी ना मिलेगी दुबारा " का टैग मेरी कहानी का मुख्य स्रोत है, क्योंकि यह सिर्फ मेरी ही नहीं बल्कि हर उस छात्र–छात्रा की कहानी है, जिन्हें नई चीजें देखने–सुनने और सीखने को मिलती हैं । जहाँ हर छात्र –छात्रा अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने घर–शहर को छोड़कर अन्य शहर में पलायन करते हैं । इसलिए उन सभी को

इस कहानी के माध्यम से बताना चाहती हूँ कि यह ज़िंदगी के कुछ अनमोल पल लौट कर नहीं आते, इसलिए बाद में अफसोस करने से बेहतर है कि ज़िंदगी के हर पहलू को सीखें और समझें और उसका आनंद उठाएँ । क्योंकि दोस्तों ज़िंदगी ना मिलेगी दुबारा!😊

अंत में मैं कहना चाहूँगी कि मेरा कॉलेज का अनुभव बाकी सबकी तरफ ही था, लेकिन थोड़ा सा अलग । यहाँ मैंने बहुत कुछ सीखा । यहीं से मुझे दुनिया को देखने का एक नया नज़रिया मिला; जिसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ ।

*************

# अंतर्मन की शांति

पूजा रस्तोगी
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, समाजशास्त्र

कभी तुमने खुद से पूछा है- "आखिर मैं क्या चाहती हूँ ?" अक्सर जवाब में हमारे मन में बहुत सी बातें आती है- प्यार, सफलता, पैसा, रिश्ते, सम्मान...। पर अगर गहराई से सोचो तो हर एक इंसान की एक ही चाह होती है-"मुझे बस शांति चाहिए।"लेकिन अफसोस ये है कि जिस शांति की हमें तलाश होती है, हम उसे बाहर ढूँढ़ते हैं- लोगों में, जगहों में, रिश्तों में, जबकि वो शांति हमारे भीतर ही छुपी होती है। बस हमें उसे महसूस करना नहीं आता। जब इंसान Overthinking, डर और बेचैनी से बाहर निकलता है, तब वो समझता है कि सबसे बड़ी राहत किसी और चीज को पाने में नहीं, बल्कि खुद को अपनाने में होती है।

## अंतर्मन की शांति क्या होती है..?

शांति का मतलब ये नहीं कि तुम्हारी जिन्दगी में कोई समस्या नहीं है। शांति का मतलब है- समस्याओं के बीच भी अंदर से स्थिर रहना । शांति वह अवस्था है, जहाँ तुम किसी भी हालात से, शब्दों से, किसी के रवैये से डिगते नहीं हो। जहाँ तुम हर स्थिति में बस इतना कह पाते हो- ठीक है, मैं इसे भी Handle कर सकती हूँ, मैं इससे भी गुजर सकती हूँ। दरअसल "शांति तब नहीं आती, जब हालात बदलते है। शांति तब आती है, जब तुम हालातों को स्वीकार करना सीख जाते हो।"

शांति का मतलब भागना नहीं है, बल्कि ठहरना है, खुद के साथ, खुद के लिए, अपने भीतर की आत्मा, अपने अंतर्मन के हर हिस्से के साथ।

***************

# भौतिक विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

भौतिक विज्ञान परिषद द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर दिनांक 28 फरवरी 2026 को विभिन्न शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक गतिविधियों का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.अवधेश नारायण सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा स्वागत गीत एवं सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से निबंध एवं पोस्टर प्रतियोगिता शामिल थी। छात्र-छात्राओं ने इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर अपनी रचनात्मक प्रतिभा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन एक नए विषय "Science and AI - Transforming Tomorrow" पर किया गया। पोस्टर प्रति-योगिता में प्रथम स्थान एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर के संतोष कुमार, द्वितीय स्थान एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर की सिमरजीत कौर तथा बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर की निहारिका सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

"मानव जीवन में भौतिक विज्ञान का महत्व" विषय पर संपन्न हुई निबंध प्रतियोगिता में बी.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर की कशिश ने प्रथम स्थान तथा इसी कक्षा के राहुल सिंह बिष्ट ने द्वितीय स्थान तथा बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर की सेजल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समस्त विजेता प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भौतिक विज्ञान विभाग प्रभारी प्रोफेसर विकास दुबे द्वारा की गई। कार्यक्रम के संयोजक डॉ.हेम पाण्डेय और सहसंयोजक डॉ. नेहा अरोड़ा द्वारा क्रमशः विज्ञान के विभिन्न पहलुओं तथा रमन प्रभाव पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में मंच संचालन डॉक्टर गायत्री कांडपाल द्वारा किया गया। विभागीय परिषद के अध्यक्ष सचिन राजपूत द्वारा सर सी.वी. रमन के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला गया। विभाग प्रभारी प्रोफेसर विकास दुबे ने विज्ञान में नवाचार एवं प्रयोगात्मक भौतिकी विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया गया।

# इतिहास परिषद द्वारा आयोजित किया गया : संस्कृति 2.0

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के इतिहास विभाग के तत्वावधान में गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी "संस्कृति 2.0" कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत तथा विश्व की विविध संस्कृतियों से परिचित कराना तथा उनमें सांस्कृतिक चेतना का विकास करना था ।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक ढंग से भाग लेते हुए देश की विभिन्न संस्कृतियों से सम्बन्धित नृत्य, नाटक तथा लोकगीत से जुड़ी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं । इन प्रस्तुतियों के द्वारा विद्यार्थियों ने भारत की बहुरंगी सांस्कृतिक परम्पराओं तथा विश्व की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को मंच पर जीवंत रूप में प्रस्तुत किया । उपस्थित दर्शकों ने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । आपने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता हमारी शक्ति है और युवा पीढ़ी को अपनी परम्पराओं तथा सांस्कृतिक विरासत को समझते हुए उसे आगे बढ़ाने का दायित्व निभाना चाहिए । आपने इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए इतिहास विभाग तथा प्रतिभागी विद्यार्थियों की सराहना की । इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि इतिहास केवल अतीत का अध्ययन नहीं है, बल्कि वह संस्कृति, परम्परा और समाज की निरंतरता को समझने का माध्यम भी है। 'संस्कृति 2.0' जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं और उनमें सांस्कृतिक सहिष्णुता तथा संवाद की भावना को विकसित करते हैं।

कार्यक्रम के अंत में इतिहास विभाग के प्राध्यापक डॉ. प्रमोद जोशी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया ।

इस अवसर पर एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर इतिहास की छात्रा मानसी ने कला प्रदर्शनी के माध्यम से अपनी कृतियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। 'संस्कृति 2.0' कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने मानसी की हस्तकला की सराहना की । इतिहास परिषद द्वारा आयोजित 'संस्कृति 2.0' कार्यक्रम का संचालन बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर की छात्रा अनामिका सिंह और इसी कक्षा के छात्र शुवांशु बिष्ट द्वारा किया गया ।

***************

# एक पेड़ की आख़िरी चिट्ठी

संगीता
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

प्रिय इंसान,

जब तुम ये चिट्ठी पढ़ रहे होगे, तब तक शायद मैं इस दुनिया में न रहूँ। हाँ, मैं वही पेड़ हूँ, जिसके नीचे तुम कभी बचपन में खेला करते थे। मेरे मीठे फलों को खाया करते थे। तुम और तुम्हारे साथी झूला बाँधकर मुझ पर झूला करते थे। कुछ याद है तुम्हें...? जब तुम थक जाया करते थे, तो मेरी छाँव मैं बैठा करते थे और मैं तुम्हें ठंढी हवा देता था। 'तब तुम छोटे थे, और मैं बड़ा..'लेकिन अब तुम बड़े हो गए हो और मैं इस डर में हूँ कि कहीं तुम मुझे भी मेरे बाकी साथियों की तरह काट न दो। हाँ, जानता हूँ मैं, तुम भी मजबूर होगे। लेकिन, आज मैं और भी डर गया हूँ, क्योंकि आज सिर्फ मेरा ही नहीं, तुम्हारा जीवन भी खतरे में है। तुम्हारी साँसे, तुम्हारी हवा, तुम्हारी जिंदगी- सब कुछ हम पर ही तो टिका है। फिर भी तुम हमें काटते जा रहे हो। आज जब मेरी जड़ें कमजोर हो गई हैं और मेरी पत्तियां सूख कर झड़ने लगी हैं, तो मैं बस इतना ही कहना चाहूँगा कि अगर तुमने हमें नहीं बचाया, तो तुम स्वयं को भी नहीं बचा पाओगे। मैं जा रहा हूँ, लेकिन जाते-जाते एक उम्मीद छोड़ कर जा रहा हूँ कि शायद तुम बदल जाओ। शायद तुम किसी और पेड़ को बचा लो। शायद तुम फिर से वही इंसान बन जाओ, जो कभी मेरी छाँव में खेला करता था।

तुम्हारा शुभचिंतक
एक पेड़

# यूथ रेडक्रास सोसाइटी द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

दिनाँक: 11.03.2026

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में यूथ रेडक्रास सोसायटी एवं सुभाष चंद्र बोस यूथ क्लब, रुद्रपुर ब्लॉक के संयुक्त तत्वाधान में "एच.आई.वी./एड्स की जानकारी ही बचाव है" विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उत्तराखण्ड राज्य एड्स नियंत्रण समिति द्वारा एड्स के सम्बन्ध में जागरूकता के प्रचार प्रसार के लिए प्रदेश भर में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत सुभाष चंद्र बोस यूथ क्लब, रुद्रपुर ब्लॉक की संयोजक और महाविद्यालय यूथ रेडक्रॉस सोसाइटी की सक्रिय स्वयंसेवी तनीशा चावला द्वारा विषय प्रवर्तन से हुई। इसके पश्चात महाविद्यालय यूथ रेडक्रास सोसाइटी के प्रभारी डॉ.राजेश कुमार सिंह ने उपस्थित प्रतिभागियों को भाषण प्रतियोगिता के नियमों और बारीकियों से परिचित कराया। भाषण प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर के गणेश भट्ट ने प्रथम, बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर की अनामिका सिंह ने द्वितीय तथा बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर के अजय कुमार मिश्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह ने भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता के विजेताओं शीघ्र ही जनपद के स्वास्थ्य विभाग द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में समाजशास्त्र विभाग के प्रो. रवीन्द्र कुमार सैनी, संस्कृत विभाग की डॉ. निमिता कान्याल और हिंदी विभाग की डॉ. रूमा शाह एवं डॉ. सुमन फुलारा ने निर्णायक मण्डल की भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में यूथ रेडक्रास की सह प्रभारी डॉ. अलंकृता सिंह ने उपस्थित अतिथियों, निर्णायक मण्डल और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

# महिला दिवस के उपलक्ष्य में भाषण एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं में महिला सशक्तीकरण, समानता, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पूजा शर्मा, एडवोकेट ने उपस्थित छात्र छात्राओं को सम्बोधित किया। आपने अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में छात्राओं को शिक्षा, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की संयोजिका महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष प्रोफेसर आशा राणा के कुशल निर्देशन में कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 'महिलाओं का उत्थान पुरुषों के पतन का प्रतीक नहीं' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, समाजशास्त्र की छात्रा रश्मि तिवारी, द्वितीय स्थान बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर के अर्जुन तथा तृतीय स्थान एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, समाजशास्त्र की पूजा रस्तोगी द्वारा प्राप्त किया गया। ' नई सदी की नई नारी' विषय पर आयोजित पोस्टर एवं अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की साक्षी साह, द्वितीय स्थान बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर की सावीन जहाँ तथा तृतीय स्थान एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, राजनीति विज्ञान की नीतू मौर्या ने प्राप्त किया।

****************

# राष्ट्रीय सेवा योजना : सात दिवसीय विशेष शिविर - 2026

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाइयों का सात दिवसीय विशेष शिविर राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय और मॉडल राजकीय प्राथमिक विद्यालय, जहाँगीरपुर , रुद्रपुर में दिनांक 13 से 19 मार्च 2026 के बीच आयोजित हुआ ।

शिविर का आरम्भ उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि ग्रामसभा जहाँगीरपुर के ग्राम प्रधान श्री दिलशाद हुसैन और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ । उद्घाटन समारोह में विभिन्न शिविरार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए । उद्घाटन समारोह के कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना की शिविरार्थी सरिता बिष्ट और दिया टाकुली द्वारा किया गए । सात दिवसीय दिन-रात के इस विशेष शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं प्रभारी डॉ. चंद्रपाल, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शिल्पी अग्रवाल एवं बी.एड. विभाग की शिक्षिका डॉ. श्रृंखला जोशी सहित 32 स्वयंसेवियों ने प्रतिभाग किया ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के इस सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, नशा उन्मूलन, साक्षरता, मोबाइल के सही उपयोग, स्वास्थ्य जागरूकता, जल संरक्षण, नारी सशक्तिकरण सहित विभिन्न सामाजिक विषयों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए । इस शिविर के दौरान सभी स्वयंसेवियों ने एक साथ रहते हुए विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया । इन गतिविधियों को 32 स्वयंसेवकों ने अनुशासन और समर्पण के साथ सफलतापूर्वक संपन्न किया।

सात दिनों के इस विशेष शिविर के समापन समारोह के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.अवधेश नारायण सिंह, मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान श्री दिलशाद हुसैन एवं विशिष्ट अतिथि श्री सतीश घीक द्वारा स्वयंसेवियों को उनके प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कृत करते हुए प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। समापन समारोह के इस विशेष अवसर पर विभिन्न शिविरार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शिविर के कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा शिविरार्थियों के सात दिनों की विभिन्न गतिविधियों में उनके प्रदर्शन का आकलन किया गया। इस आकलन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी (बालक वर्ग) के रूप में गोविंद और सुनील तथा सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी(बालिका वर्ग) के रूप में मानसी पांडे और सरिता बिष्ट को सम्मानित किया गया। इस सात दिवसीय शिविर के दौरान स्वयंसेवियों के मध्य विविध प्रति-योगिताएं आयोजित की गईं। पोस्टर प्रतियोगिता में मुस्कान ने प्रथम, संगीता ने द्वितीय तथा प्रीति मेहरा और गायत्री ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रेम विश्वास ने प्रथम, मुस्कान ने द्वितीय तथा गरिमा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एकल नृत्य की प्रति-योगिता में संगीता और सरिता बिष्ट ने संयुक्त रूप से प्रथम, कविता आर्या और मानसी पाण्डेय ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान तथा तरनदीप और हिमांशु परिहार ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह एकल गायन की प्रति-योगिता में निकिता कोरी और हिमांशु परिहार ने संयुक्त रूप से प्रथम, सरिता बिष्ट और मोहित पाण्डेय ने द्वितीय तथा दिया और रोहित कुमार ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। मेंहदी प्रतियोगिता में संगीता ने प्रथम, आरती ने द्वितीय तथा मानसी पाण्डेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी तरह रंगोली प्रतियोगिता में निकिता कोरी और प्रीति मेहरा ने संयुक्त रूप से प्रथम, मुस्कान और गायत्री पाल ने संयुक्त रूप से द्वितीय तथा श्याम सिंह, गायत्री, रोशनी और प्रेम विश्वास ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में संगीता ने प्रथम, मानसी पाण्डेय ने द्वितीय तथा लक्ष्मी गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वाद विवाद प्रतियोगिता में सुनील ने प्रथम, इकरा बी पाशा ने द्वितीय तथा रोहित कुमार और तरनदीप ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया।

'मोबाइल की लत' विषय पर एक स्वरचित नाटक के मंचन में भूमिका निभाने वाले गोविन्द, आरती, प्रीति मेहरा, निशु सरकार, प्रीति और अंजली सभी को प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसी तरह आर्ट एंड क्राफ्ट प्रतियोगिता में दिया कंडारी, गोविन्द और शिवांगी को संयुक्त रूप से प्रथम स्थान, गौरी सिंह एवं खुशी को संयुक्त रूप से द्वितीय तथा स्नेहा गुम्बर, अनमोल और श्याम सिंह को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

शिविर के दौरान श्रमदान करते शिविरार्थी

*****************

# विकसित भारत युवा संसद - 2026

दिनाँक 20 मार्च 2026 को भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के तत्वाधान में सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर द्वारा विकसित भारत युवा संसद प्रतियोगिता -2026 का आयोजन हुआ।

महाविद्यालय के सेमिनार हाल में सुबह 11 बजे से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन आयोजन के मुख्य अतिथि गोविन्द वल्लभ पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर के भूतपूर्व प्रोफेसर बी.एम.कुमार तथा विशिष्ट अतिथि अजीम प्रेम जी फाउंडेशन के रिसोर्स परसन श्री सुनील पंत तथा महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ । इसके पश्चात माई भारत पोर्टल के महाविद्यालय प्रभारी और इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ.राजेश कुमार सिंह द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया । स्वागत के क्रम में आयोजन समिति के सदस्यों द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को एक-एक पौधा भेंट किया गया । स्वागत समारोह के पश्चात डॉ.राजेश कुमार सिंह द्वारा विषय प्रवर्तन किया गया ।

जिला युवा अधिकारी, ऊधम सिंह नगर श्री रोशन कुमार द्वारा अपने उद्बोधन में प्रतिभागियों और निर्णायकों को इस प्रतियोगिता की बारीकियों से परिचित कराया गया । इस कार्यक्रम में प्रोफेसर बी.एम.कुमार, प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह, अजीम प्रेम जी फाउंडेशन के श्री सुनील पंत, राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर के राजनीति विज्ञान विभाग प्रभारी प्रोफेसर आदित्य प्रकाश सिंह तथा समाजशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ.राजेश कुमार सिंह ने इस प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल की भूमिका निभाई।

इस प्रतियोगिता के लिए माई भारत पोर्टल पर कुल 62 युवाओं ने आवेदन किया था । प्रतियोगिता के लिए ऊधम सिंह नगर जनपद के कुल 17 प्रतिभागी उपस्थित हुए । प्रतिभागियों ने "आपातकाल के पचास वर्ष–भारतीय लोकतंत्र के लिए सबक"(Fifty Years of Emergency-Lessons for Indian Democracy) विषय पर अपना विचार व्यक्त किया । इनमें से प्रत्येक प्रतिभागी को अपने विचार व्यक्त करने के लिए कुल 3 मिनट का समय मिला । निर्णायक मण्डल ने इनमें से कुल 05 प्रतिभागियों गणेश भट्ट, अंशु पाण्डेय, सुदर्शन सोरारी, नितिन सिंह और कैलाश चौधरी को राज्य स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के लिए विजयी घोषित किया ।

भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित इस कार्यक्रम के लिए महाविद्यालय के माई भारत पोर्टल के प्रभारी डॉ.राजेश कुमार सिंह को कार्यक्रम समन्वयक नियुक्त किया गया था । इस कार्यक्रम के लिए महाविद्यालय स्तर पर एक आयोजन समिति का गठन किया गया । समाजशास्त्र विभाग के प्रो. रवीन्द्र कुमार सैनी के संयोजकत्व में गठित आयोजन समिति में भौतिक विज्ञान विभाग प्रभारी प्रोफेसर विकास दुबे तथा समाजशास्त्र विभाग प्रभारी प्रोफेसर हेमलता सैनी ने सदस्य की भूमिका निभाई । यह कार्यक्रम आयोजन समिति द्वारा जिला युवा अधिकारी श्री रोशन कुमार के सहयोग से संपन्न किया गया ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में "माई भारत" की राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवी मुस्कान चावला एवं तनीशा चावला ने विशेष सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे ।

राज्य स्तर की प्रतियोगिता के लिए चयनित प्रतिभागी

********************

# कैम्पस क्रॉनिकल : समाचार संक्षेप में

- सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के इग्नू अध्ययन केंद्र में इस सत्र से स्नातकोत्तर स्तर पर एम.कॉम. एवं एम.ए(राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी और शिक्षाशास्त्र) के नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। इसके अतिरिक्त इसी सत्र से उपभोक्ता संरक्षण में प्रमाणपत्र और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय प्रचालन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के नए पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं।

- सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के कैरियर काउंसिलिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तहत सनसेरा इंजीनियरिंग लिमिटेड में प्लेसमेंट के आयोजित प्लेसमेंट कैंप में कुल 48 विद्यार्थियों का चयन हुआ। चयन प्रक्रिया के अंतर्गत लिखित प्रतियोगिता में महाविद्यालय के 150 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया, जिसमें से 88 विद्यार्थियों को साक्षात्कार हेतु चयनित किया गया। अंतिम चरण में साक्षात्कार के माध्यम से कुल 48 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।

- सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के भूगोल विभाग के शोध छात्र वीरेन्द्र का चयन हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुआ है। इसके पूर्व वीरेंद्र ने 15 वर्षों तक भारतीय नौसेना में समर्पित सेवा दी है। वर्तमान में वीरेंद्र भूगोल विभाग की डॉ. पूनम शाह गंगोला के निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं।

- सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के भूगोल विभाग के शोध छात्र वसीम अहमद को कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। वसीम अहमद ने अपना शोधकार्य डॉ. पूनम शाह गंगोला के निर्देशन में पूर्ण किया है। "Impact on Climate Change on Water Resources : A Case Study of Baliya Catchment District Nainital" विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वसीम अहमद ने यह खुलासा किया है कि जलवायु परिवर्तनों का क्षेत्र के जल संसाधनों पर गम्भीर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

- चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा, हरिद्वार में आयोजित सातवें उत्तराखंड राजनीति विज्ञान अधिवेशन के दौरान सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर की शोध छात्रा तब्बू मार्तोलिया को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुति हेतु पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनके शोध पत्र “अनुच्छेद 370 का निरसन और लद्दाख की स्थिति” विषय पर उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए प्रदान किया गया। उन्होंने अपने शोधपत्र में अनुच्छेद 370 के निरसन के बाद लद्दाख में हुए राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसे निर्णायक मंडल एवं विशेषज्ञों द्वारा अत्यंत सराहनीय बताया गया। वर्तमान में तब्बू मर्तोलिया राजनीति विज्ञान की प्रो.आशा राणा के निर्देशन में शोध कार्य कर रही हैं।

- महाविद्यालय के 21 छात्रों का प्रतिष्ठित बैंकिंग व वित्तीय संस्थानों में चयन हुआ है। महाविद्यालय कैरियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल तथा देवभूमि ग्लोबल सर्विसेज के सहयोग से आयोजित प्लेसमेंट में एक्सिस बैंक में प्रताप, पलक चौहान, रवि सुयाल, शिवानी तोमर, भारत चौहान व विशाल सिंह असिस्टेंट मैनेजर बने। एचडीएफसी बैंक में सुनील व अमन भारती डिप्टी मैनेजर और आदित्य बिरला फाइनेंस में अंशु गंगवार डिप्टी मैनेजर चयनित हुए हैं। वहीं स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में श्रृष्टि चौधरी, नूरी, मोहम्मद साहिल, शहजाद, सोमवीर सिंह, शिवानी, समीत बधानी, विपुल शर्मा, लवी गोला, शुभम सिंह राणा, पलक व दीपिका बिष्ट का चयन विभिन्न पदों पर हुआ।
- दिनाँक 16 मार्च 2026 को कुमायूँ विश्वविद्यालय द्वारा जुजुत्सु(बालक एवं बालिका वर्ग) का ट्रायल आयोजित किया गया। इस ट्रायल में महाविद्यालय की आकृति कौर, हैपी सिंह, शिवांगी, लौरी, सोनम, कौशल्या गुप्ता एवं कटाक्षा कौर आल इंडिया के लिए चयनित हुए।
- दिनाँक 09 मार्च 2026 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में आयोजित पेंचक सिलॉट प्रतियोगिता में महाविद्यालय के बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र चेतन प्रजापति द्वारा सिल्वर मेडल प्राप्त किया गया।

सिल्वर मेडल प्राप्त करते हुए चेतन प्रजापति